

## प्रेमचंद के दलित जीवन से संबंधित कहानियाँ सार

**Harsh Vardhan**

Research Scholar

Department of Hindi

Singhania university , Pacheri Bari , Jhunjhunu , Rajasthan

**(Dr) Tej Narayan Ojha**

Professor

Supervisor

Department of Hindi

Maharaja Agrasen College

University of Delhi

**DECLARATION:** I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETED DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

मुंशी प्रेमचंद को हिंदी साहित्य के पहले लेखक के रूप में श्रेय दिया जाता है जिन्होंने अपने लेखन में दलितों का मुद्दा उठाया। प्रेमचंद से पहले शायद ही कोई हिंदी लेखक होगा जो इस मुद्दे पर वास्तविक चिंता दिखाने के लिए उल्लेख के योग्य हो। प्रेमचंद ने ही सबसे पहले इस अभाव को दूर करने का प्रयास किया और हिंदी साहित्य दलित विषय के साथ उर्वर हो गया। भारतेंदु हरीश चंद्र, रामचंद्र शुक्ल और प्रताप नारायण मिश्रा जैसे कई आधुनिक लेखकों के लेखन में, हिंदी साहित्य दलितों की तुलना में कुछ उच्च वर्गों की चिंताओं में अधिक बाध्य था, लेकिन प्रेमचंद के लेखन में, इसे खुले स्थान पर मुक्त किया गया था।

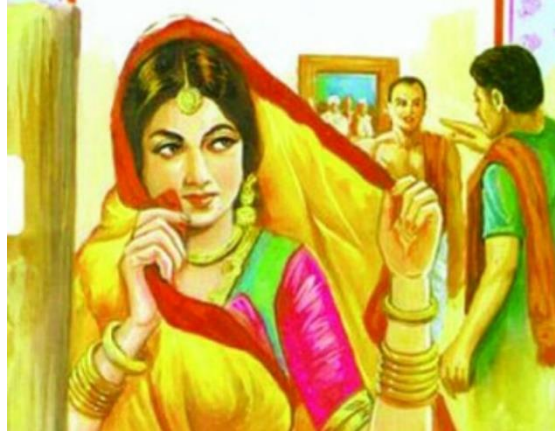
प्रेमचंद दृ इस नाम से ही हमारे मन में उजागर होती है सचेत, सजीव कहानियाँ जो हमारी पारंपरिक सोच, हमारे रुढ़िवादी विचारों को झकझोर कर रख देती है। मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ केवल कहानियाँ नहीं बल्की एक अलौकिक प्रकाश की भांति है जो हमारी सामाजिक एवं निजी भ्रांतियों के अँधेरे को मिटाने का प्रयास करती है।

**कीवर्ड्स:**—मुंशी प्रेमचंद, हिंदी साहित्य, रुढ़िवादी विचारों, आधुनिक लेखकों, हमारी पारंपरिक ।

प्रेमचंद ने कभी किसी संदेश को किसी कल्पित कथा पर नहीं चिपकाया बल्कि उन्होंने दलितों के इतिहास, गरीबी, लाचारी, उन पर थोपे गए अंतर और इसके मनोसामाजिक परिणाम को अपने शब्दों और भाषा में प्रलेखित किया। हम सोचते हैं कि उपन्यास के अंत में पाठक को सामान्य संदेश न बताने से पाठक को केवल साधारण संदेश (कि निचली जाति के लोगों के साथ दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए, कि दलित को

सामाजिक-समानतावादी का हिस्सा माना जाना चाहिए) से अधिक प्राप्त होता है। समाज और समान अधिकार दिए जाने चाहिए और इसी तरह)। वास्तव में, कोई भी निहित पाठक शायद उस स्थिति की सामान्यता को जानता होगा जो ब्राह्मण और दलित को बांधती है और इसे सुसंगत बनाती है। यह बंधन जो उपन्यास चैनलों में जाति का एक उचित द्वंद्व दिखाया गया है।

31 जुलाई 1880 को बनारस के पास स्थित लमही गाँव में आनंदी देवी और मुंशी अजायबराय के घर एक पुत्र का जन्म हुआ, नाम रखा गया, 'धनपत राय'। इसी पुत्र को हम और आप प्रेमचंद के नाम से जानते हैं। प्रेमचंद के पिता मुंशी अजायबराय लमही में डाकमुंशी थे। प्रेमचंद अपने माता पिता की चौथी संतान थे। उनकी पहली दोनो बहनों की जन्म के कुछ दिन बाद ही म्रत्यु हो चुकी थी तथा उनकी तीसरी बहन का नाम सुग्गी था। प्रेमचंद बस आठ ही बरस के हुए थे कि उनकी माता चल बसी। उनकी कहानी 'बड़े घर की बेटी' में आनंदी का किरदार उनकी माँ पर ही आधारित है।



मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखी गई कहानी (1926) बड़े घर की बेटी

प्रेमचंद की कहानियों में अपनापन, सामाजिक दशा का वर्णन, जात-पात के भेदभाव से लेकर गरीबी और अमीरी के बीच झलकते दर्द को साफ महसूस किया जा सकता है। यही वजह है कि मुंशी प्रेमचंद की कहानी पढ़ते हुए बच्चों से लेकर बड़े-बुजुर्ग तक सभी रम जाते हैं। प्रेमचंद की कहानियों में सेवासदन, गबन, कर्मभूमि, प्रेमाश्रम, गोदान, रंगभूमि व निर्मला जैसे कई उपन्यास लोकप्रिय हैं। इसके अलावा कफन, पंच परमेश्वर, पूस की रात, बड़े घर की बेटी, दो बैलों की कथा और बूढ़ी काकी जैसी 300 से अधिक कहानियां भी चर्चित हैं।

प्रेमचंद की सबसे अच्छी कहानियों में से एक, 'कफ़न' घीसू और माधव के जीवन और संघर्षों का अनुसरण करती है— एक पिता—पुत्र की जोड़ी जो जरूरत पड़ने पर नौकरशाही की नौकरी करने के लिए बहुत आलसी हैं। यह उनकी एक दार्शनिक वार्ता के दौरान है घ पुस्तक में शामिल प्रत्येक कहानी मानव मन के अनेकदृश्यों, चेतना के अनेक छोरों, सामाजिक कुशितियों तथा आर्थिक उत्पीड़न के विविध आयामों को सम्पूर्ण कलात्मकता के साथ अनावृत करती है। कफ़न कहानी प्रेमचंद की अन्य कहानियों से एकदम भिन्न है।

## कफ़न



मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखी गई कहानी (2004) 'कफ़न'

'बूढ़ी काकी' एक बूढ़ी अंधी महिला के दिल को छू लेने वाली कहानी है, जिसने अपने पति और बेटों को खो दिया। जब उसका भतीजा अपनी सारी संपत्ति उसे हस्तांतरित करने के बाद उसकी देखभाल करने का वादा करता है, तो मासूम बूढ़ी औरत केवल धोखा देने और दुर्व्यवहार करने के लिए सहमत होती है। हालांकि वह अपने भतीजे और उसकी पत्नी रूपा के साथ रहती है, लेकिन वह परिवार की उपेक्षित सदस्य है। एक बार घर में एक फंक्शन के दौरान सभी अच्छे खाने का लुत्फ उठा रहे हैं लेकिन बूढ़ी काकी को भूखा ही रहने दिया जाता है। सभी के जाने के बाद, रूपा ने देखा कि बूढ़ी काकी के पास उसकी भूख को कम करने के लिए कुछ बचा हुआ है और यह दृष्टि उसे उनके कुकर्मों का एहसास कराती है।

बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। बूढ़ी काकी में जिह्वा—स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष नहीं थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का, रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही।



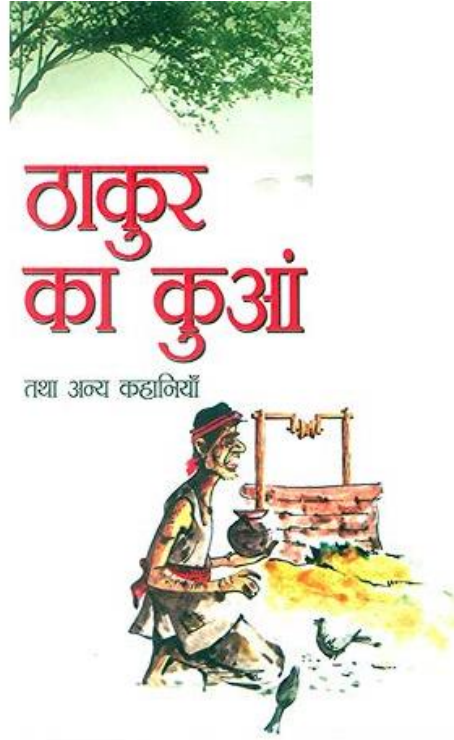
मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखी गई कहानी (1921) 'बूढ़ी काकी'

ईदगाह 5 साल के हामिद की भावनात्मक रूप से चलती कहानी है, जो अपने माता-पिता को खोने के बाद अपनी गरीब दादी के साथ रहता है। ईद के खुशी के त्योहार के दौरान, हर कोई अपनी नमाज अदा करने के लिए ईदगाह की ओर जाता है। गांव के हामिद के दोस्त और अन्य बच्चे अपने लिए मिठाई और खिलौने खरीदने के लिए उत्साहित हैं। लेकिन जब हामिद अपने लिए कुछ खरीदने के लिए ललचाता है, तो वह इस विचार को दूर कर देता है और इसके बजाय अपनी बूढ़ी दादी को इस ईद पर उपहार देने का फैसला करता है। वह उसके लिए चिमटे की एक जोड़ी खरीदता है ताकि वह उसके लिए खाना बनाते समय अपने हाथ न जलाए।



मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखी गई कहानी (1938) "ईदगाह"

हालांकि 'ठाकुर का कुआं' आजादी से पहले हमारे समाज में दलितों के साथ हुए भेदभाव की कहानी है, लेकिन दुर्भाग्य से यह कहानी आज भी प्रासंगिक है। गंगी और उनके पति एक गरीब दलित दंपति हैं। जब गंगी का बीमार पति बदबूदार होने के कारण पानी पीने में असमर्थ होता है, तो वह ठाकुर के कुएं से कुछ लाने का फैसला करती है जो उसके जैसे दलितों के लिए मना है। वह जानती है कि अगर पकड़ा गया, तो उसे पीट-पीटकर मार डाला जाएगा, लेकिन वह अभी भी अपने बीमार पति की मदद करने का फैसला करती है।



मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखी गई कहानी (1924) 'ठाकुर का कुआं'

आजादी के पचास साल बाद यह जरूरी है कि हम अपने तथाकथित सुधारकों, लेखकों और इतिहासकारों का विश्लेषण करें। प्रेमचंद का विश्लेषण किसी अन्य लेखक की तरह किया जाना चाहिए।

यद्यपि प्रेमचंद ने वास्तविक रूप से ब्राह्मणों और उच्च जाति के अन्य लोगों द्वारा समाज की मुख्यधारा से निकाले गए दलितों के हाशिए के जीवन को लिखा है, उन्होंने कहीं भी उन्हें उनकी नीची स्थिति से ऊपर उठाने की कोशिश नहीं की, न ही उन्हें अपने सीमांत जीवन से स्थिति की केंद्रीयता प्राप्त करने के लिए मजबूर किया। वह दलितों के दिलों में जोश और भावना का संचार करने में पूरी तरह विफल रहे। फिर भी, दलित साहित्य में प्रेमचंद के योगदान को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि उन्होंने उस दौर में लिखा था

जब दलितों के लिए लेखन हमारे वर्तमान समय की तरह खुला और स्वतंत्र था। लेखन का कोई भी विश्लेषण उनके लेखन की गुणवत्ता पर आधारित होना चाहिए न कि उनके जन्म के आधार पर।

इसलिए जब हम उनके लेखन का विश्लेषण करते हैं तो प्रेमचंद की जाति या धर्म का कोई सरोकार नहीं होना चाहिए। जो लोग प्रेमचंद को उनकी जाति के आधार पर विश्लेषित करते हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि उनकी भी एक जाति है और अगर वे जाति के अनुसार लिखते हैं, तो बीस साल बाद, उनके लेखन की भी उसी तरह की जांच होगी, जैसे वे प्रेमचंद के लिए कर रहे हैं।

## संदर्भ

1. कुमार, कुलदीप (6 फरवरी 2020)। "सिर्फ प्रेमचंद की पत्नी नहीं"। हिन्दू। 30 अगस्त 2021 को लिया गया।
2. प्रेमचंद; गोपाल, मदन (2006)। माई लाइफ एंड टाइम्स, प्रेमचंद: एन ऑटोबायोग्राफिकल नैरेटिव, रीक्रिएटेड फ्रॉम हिज वर्क्स। नई दिल्ली: लोटस कलेक्शन, रोली बुक्स। पी। 1. आईएसबीएन 978-81-7436-432-6। मुझे धनपत राय कहा जाता था।
3. बालिन, वी.आई. (1979)। "प्रेमचंद"। ग्रेट सोवियत इनसाइक्लोपीडिया (तीसरा संस्करण)। 25 अगस्त 2021 को पुनःप्राप्त - द फ्री डिक्शनरी के माध्यम से।
4. "प्रेमचंद छ भारतीय लेखक"। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका। 27 जुलाई 2021। 25 अगस्त 2021 को लिया गया।
5. "प्रेमचंद, वह पुरुष जिसने अपने समय से पहले महिलाओं की दुर्दशा और जाति पदानुक्रम पर लिखा"। इंडिया टुडे। 11 अगस्त 2016। 25 नवंबर 2021 को लिया गया।
6. सोलर्स, माइकल डी.; जेनिंग्स, अर्बोलिना लामास, एड. (2008)। द फैक्ट्स ऑन फाइल कम्पेनियन टू द वर्ल्ड नॉवेल: 1900 टू द प्रेजेंट। इन्फोबेस प्रकाशन। पीपी. 631-633। आईएसबीएन 978-0-8160-6233-1।
7. स्वान, रॉबर्ट ओ। (1969)। नामी गांव के मुंशी प्रेमचंद। ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस। गुप्ता 1998, पी. 7 सिंगी 2006, पृ. 15
8. राय, अमृत (1982)। प्रेमचंद: एक जीवन। त्रिवेदी, हरीश द्वारा अनुवादित। नई दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस।
9. पोलक, शेल्डन आई (2003)। इतिहास में साहित्यिक संस्कृतियाँ: दक्षिण एशिया से पुनर्निर्माण। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस। पी। 1011. आईएसबीएन 978-0-520-22821-4।
10. सिन्हा, ई. अनिरुद्ध (14 जून 2016)। "प्रेम चंद" पैजंउचळंससमतल.बवउ. 25 अगस्त 2021 को लिया गया।
11. दास, मोनालिसा (29 अगस्त 2015)। "कैसे बंगलुरु के एक प्रोफेसर और उनके छात्रों ने प्रेमचंद के घर को बचाने के लिए यूपी सरकार से हाथ मिलाया।" समाचार मिनट। 12 जुलाई 2021 को लिया गया।

12. कपूर, पुनखुरी (1 अगस्त 2016)। "मुंशी प्रेमचंद मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट का उद्घाटन"। द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया। टाइम्स न्यूज नेटवर्क। 13 जुलाई 2021 को लिया गया।
13. "गूगल डूडल ने मनाई मुंशी प्रेमचंद की जयंती"। हिन्दू। 31 जुलाई 2016। 3 नवंबर 2017 को लिया गया।
14. प्रेमचंद पाठक, चयनित कहानियां 1. लाल, अनुपा द्वारा अनुवादित। रत्न सागर। 2008 (1995)। आईएसबीएन 978-81-7070-213-9।
15. नरवणे, विश्वनाथ एस. (1980)। प्रेमचंद, उनका जीवन और कार्य। विकास। पी। 190. आईएसबीएन 978-0-7069-1091-9।
16. मानसरोवर – भाग 7. अमेज़न। 2018 पी. 173. असिन ठ07श्रश्र8ज्ज।
17. द बेस्ट ऑफ़ प्रेमचंद: ए कलेक्शन ऑफ़ 50 बेस्ट शॉर्ट स्टोरीज़। कॉस्मो प्रकाशन। 1997. पी. •पप. आईएसबीएन 978-81-7020-776-4। 25 जनवरी 2013 को लिया गया।
18. नारायण, गोविंद (1999)। प्रेमचंद, उपन्यासकार और विचारक। प्रगति प्रकाशन। पी। 29. आईएसबीएन 978-81-7307-059-4।
19. नागेंद्र (1981)। प्रेमचंद: एन एंथोलॉजी। बंसल। पी। 70. ओसीएलसी 8668427।

### Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by mean if any person having copyright issue or patent or anything other wise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name/ Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission/ Submission/Copyright / Patent/Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed I website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

**Harsh Vardhan**  
**(Dr) Tej Narayan Ojha**